Patrika (Indore), 12th September 2026, Page - 06

तकनीक

आइआइटी इंदौर और एसपीएसयू ने बनाया एग्रीएक्सचेंज का मंच

अब लैब में नहीं रुकेगी तकनीक, खेत में उतरेगा एग्रीटेक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. कृषि क्षेत्र में विकसित तकनीकों को प्रयोगशाला से निकालकर सीधे खेत और बाजार तक पहुंचाने की तैयारी है। इसके लिए आइआइटी इंदौर और सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय (एसपीएसयू), उदयपुर ने एग्रीएक्सचेंज की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य कृषि तकनीकों को क्षेत्रीय परीक्षण, स्टार्टअप इनक्यूबेशन, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण से जोड़ना है।

एसपीएसयू उदयपुर में 11 और 12 सितंबर को आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला 'एग्रीएक्सचेंज : स्टार्टअप्स, प्रौद्योगिकी स्थानांतरण एवं व्यावसायीकरण का संवर्धन' में एफपीओ, एग्रीटेक स्टार्टअप्स, नवप्रवर्तक, उद्योग, शिक्षाविद, सरकारी प्रतिनिधि और निवेशक शामिल हुए। आयोजन आइआइटी इंदौर के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस एग्रीहब के माध्यम से हो रहा है। आईसीएआर-एनएसआर आई इंदौर, आईसीएआर-सीआईएई भोपाल और सी-डैक पुणे सहयोगी संस्थान हैं।

सोयाबीन से भूजल तक तकनीक

आइआइटी इंदौर का एग्रीहब जीनोमिक्स, प्रिसीजन एग्रीकल्चर, एआई/एमएल और आइओटी पर काम कर रहा है। सोयाबीन और तिलहनी फसलों के लिए जीनोम ब्राउजर और एग्जीनो प्लेटफॉर्म के व्यावसायीकरण का काम यूनिजेनोलिटिक्स एलएलपी के माध्यम से किया जा रहा है। एआई/एमएल आधारित ग्राउंडवॉटर मैनेजमेंट एप्लिकेशन का पेटेंट प्रकाशित हो चुका है और मध्यप्रदेश व राजस्थान में परीक्षण चल रहा है। सॉइल माइक्रोबियल डायवर्सिटी डिटेक्टर किट का धार में परीक्षण किया जा रहा है। इसके व्यावसायीकरण के लिए पीथमपुर की इंदौर बायोटेक इनपुट्स एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड के साथ योजना है। स्मार्टफार्म, रूटरोटएआई, प्रिसीजन स्प्रेइंग, फसल कटाई के बाद प्रबंधन और बायोपेस्टीसाइड स्प्रेइंग से जुड़े समाधान भी विकसित हो रहे हैं।

पेटेंट से पहले कसौटी

एमईआईटीवाई के संयुक्त सचिव के.के. सिंह ने कहा कि कृषि नवाचारों को बड़े स्तर पर ले जाने से पहले भारतीय व अंतरराष्ट्रीय पेटेंट व्यवस्था से सुरक्षित करना जरूरी है। एफपीओ और शुरुआती स्टार्टअप्स को तकनीक के परीक्षण व स्थानांतरण में सक्रिय रूप से जोड़ना चाहिए। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के निदेशक (डिजिटल एग्रीकल्चर) रवि रंजन सिंह ने कहा कि प्रयोगशाला के परिणामों और खेत में तकनीक के बड़े स्तर पर इस्तेमाल के बीच अभी अंतर है। इस दूरी को कम करने के लिए पारंपरिक कार्यप्रणालियों को चुनौती देना जरूरी है।

सुविधाएं बढ़ रहीं

एसपीएसयू उदयपुर के अध्यक्ष प्रो. संजय सिन्हा ने कहा कि किसानों, प्राथमिक उत्पादकों और ब्रीडर्स सहित सभी हितधारकों को तकनीक का समान और न्यायसंगत लाभ मिलना चाहिए। आइआइटी इंदौर एग्रीहब की प्रधान अन्वेषक प्रो. अरुणा तिवारी ने कहा कि एग्रीहब एआई/एमएल रिसर्च को वास्तविक कृषि जरूरतों से जोड़कर डीप-टेक एग्रीटेक स्टार्टअप्स को इनक्यूबेशन सहयोग, हाई-परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग संसाधन और केंद्रीकृत कृषि डेटासेट उपलब्ध करा रहा है। इससे पेटेंट, व्यावसायीकरण और बाजार में तकनीक अपनाने की प्रक्रिया तेज होगी।